1. **QS वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग्स**: हाल ही में, IIT दिल्ली ने **QS वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग्स 2026** में भारत की सर्वोच्च रैंक प्राप्त कर एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है, जिसमें उसने **27 स्थानों की छलांग लगाकर 123वां वैश्विक स्थान** प्राप्त किया।
    - यह पहली बार है जब 2018 के बाद से IIT दिल्ली ने IIT बॉम्बे को पीछे छोड़ा है, जो पिछले दस संस्करणों में से छह बार शीर्ष भारतीय संस्थान रहा था।
- **मुख्य बिंदु**: IIT बॉम्बे 11 स्थान फिसलकर 129वें स्थान पर पहुंच गया, जो पिछले वर्ष भारत का सर्वोच्च रैंक संस्थान था।
    - IIT मद्रास पहली बार शीर्ष 200 में शामिल हुआ, अब 180वें स्थान पर है (पिछले वर्ष 285 से)।
    - **MIT लगातार 14वें वर्ष विश्व में प्रथम स्थान पर है।।**
    - **शीर्ष 5 वैश्विक संस्थान**: मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, इम्पीरियल कॉलेज लंदन, स्टैनफोर्ड, ऑक्सफोर्ड, हार्वर्ड।
    - कुल संस्थानों की संख्या के आधार पर भारत **चौथे स्थान** पर है (54 संस्थान), **अमेरिका (192), ब्रिटेन (90), और चीन (72)** के बाद।
- **QS वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग्स के बारे में**: यह रैंकिंग **QS क्वाक्वारेली साइमंड्स** द्वारा प्रकाशित की जाती है, जो एक अग्रणी वैश्विक उच्च शिक्षा परामर्श संस्था है। यह प्रत्येक वर्ष **दुनिया के शीर्ष 1,000+ विश्वविद्यालयों** की रैंकिंग जारी करती है।
- **QS क्वाक्वारेली साइमंड्स के बारे में**: यह उच्च शिक्षा क्षेत्र को विश्लेषण, आंकड़ों और अंतर्दृष्टियों की सेवा प्रदान करने वाली एक प्रमुख वैश्विक प्रदाता है।
    - **फोकस**: वैश्विक उच्च शिक्षा समुदाय को मूल्यवान समर्थन और संसाधन प्रदान करना।
    - **उद्देश्य**: दुनिया भर के व्यक्तियों को उनकी पूर्ण क्षमता प्राप्त करने में सहायता करना, जिसमें शैक्षिक सफलता को बढ़ावा देना, अंतरराष्ट्रीय गतिशीलता को प्रोत्साहित करना और करियर विकास में सहायता करना शामिल है।
    - **10 संकेतक**: अकादमिक प्रतिष्ठा, संकाय-छात्र अनुपात, अंतरराष्ट्रीय संबंध नेटवर्क, अंतरराष्ट्रीय संकाय, छात्र, और आउटबाउंड एक्सचेंज छात्र आदि।

2. **ऑपरेशन सिंधु**: हाल ही में, ईरान और इज़राइल के बीच तनाव बढ़ने के कारण, भारत ने **ऑपरेशन सिंधु** प्रारंभ किया, जिसके अंतर्गत ईरान से 4,000 से अधिक भारतीय नागरिकों, जिनमें कई छात्र भी शामिल हैं, को सुरक्षित रूप से वापस लाया जा रहा है।

- **मुख्य बिंदु**: पहले समूह में 110 छात्रों को उत्तरी ईरान से आर्मेनिया निकाला गया।
  - ये छात्र **येरेवन से दिल्ली** आए और इस निकासी प्रक्रिया की निगरानी भारत के **ईरान और आर्मेनिया में स्थित मिशनों** द्वारा की जा रही है।
  - विदेश मंत्रालय (MEA) ने बताया कि ईरान में संघर्ष प्रभावित क्षेत्रों से भारतीय नागरिकों को पहले **सुरक्षित क्षेत्रों** में ले जाया जा रहा है, तत्पश्चात निकासी की जा रही है।
  - **विदेश मंत्रालय (MEA) द्वारा नई दिल्ली में 24x7 नियंत्रण कक्ष** स्थापित किया गया है।
  - ईरान में रह रहे भारतीय नागरिकों को आपातकालीन हेल्पलाइनों के माध्यम से **तेहरान स्थित भारतीय दूतावास** के संपर्क में रहने की सलाह दी गई है।
  - भारत **आर्मेनिया, तुर्कमेनिस्तान, इराक** के साथ समन्वय कर रहा है और **फारस की खाड़ी के माध्यम से संभावित समुद्री मार्गों** का उपयोग करने की योजना बना रहा है।
  - **ईरानी दूतावास अधिकारियों** द्वारा पुष्टि की गई है कि एक हमले में **कुछ भारतीय छात्र घायल** हुए हैं।
  - भारत सरकार ने **ईरान और आर्मेनिया** द्वारा निकासी प्रक्रिया में दिए गए सहयोग की सराहना की है।

3. **महासागरीय अंधकार (Ocean Darkening)**: हाल ही में एक वैज्ञानिक अध्ययन ने महासागरीय पारिस्थितिकी तंत्र के लिए बढ़ते खतरे — **महासागरीय अंधकार** — को लेकर चिंता जताई है।
   - निष्कर्षों के अनुसार, **पिछले दो दशकों में विश्व के महासागरों का 20% (1/5वां भाग) स्पष्ट रूप से अधिक अंधकारमय हो गया है**, जिससे समुद्री जीवन और वैश्विक जलवायु नियंत्रण पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है।

- **महासागरीय अंधकार के बारे में**: यह महासागरीय जल में **सूर्य प्रकाश के प्रवेश में कमी** को दर्शाता है, जिससे **फोटिक ज़ोन (प्रकाश क्षेत्र)** सिकुड़ने लगता है, यह वह ऊपरी परत होती है (लगभग 200 मीटर तक), जहाँ प्रकाश की उपस्थिति से **प्रकाश संश्लेषण** संभव होता है,जो समुद्री जीवन के लिए सहायक होता है।
- **फोटिक ज़ोन का महत्व**: यह प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से **विश्व के लगभग 90% समुद्री जीवन** का समर्थन करता है।
  - यह **कार्बन अवशोषण के माध्यम से वैश्विक जलवायु नियमन** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
  - यह **महासागरीय उत्पादकता को बढ़ाता है** और **वैश्विक मत्स्य उद्योग को बनाए रखने** में सहायक है।

- **महासागरीय अंधकार के कारण**: कृषि पोषक तत्वों, **जैविक पदार्थ** और वर्षा के कारण तलछट का अत्यधिक बहाव।
  - **शैवाल की अधिकता**, जो प्रकाश को अवरुद्ध करती है और जल की स्पष्टता को घटाती है।
  - **प्लवक (plankton) की गतिविधियों** में बदलाव — जैसे व्यवहार और घनत्व।
  - समुद्र की सतह के तापमान में वृद्धि, जिससे प्रकाश का प्रवेश प्रभावित होता है।
  - **महासागरीय परिसंचरण प्रणाली में बदलाव**, जो जल की स्पष्टता और प्रकाश वितरण को प्रभावित करते हैं।
- **समुद्री पारिस्थितिक तंत्र पर प्रभाव: फोटिक ज़ोन का सिकुड़ना** उन जीवों को प्रभावित करता है जो प्रकाश/चंद्रमा के संकेतों पर भोजन, गति और प्रजनन के लिए निर्भर होते हैं।
  - इससे **प्रतिस्पर्धा में वृद्धि** होती है और **भोजन श्रृंखला (food webs)** में विघटन हो सकता है, **यहाँ तक कि निम्न मछली पकड़ने के दबाव वाले क्षेत्रों में भी**।

4. **प्रदर्शन ग्रेडिंग सूचकांक (PGI) 2.0 रिपोर्ट (2023–24)**: हाल ही में, शिक्षा मंत्रालय ने **शैक्षणिक वर्ष 2023–24** के लिए **परफॉर्मेंस ग्रेडिंग सूचकांक (PGI) 2.0** जारी किया, जिसमें राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के **विद्यालय शिक्षा प्रदर्शन** का मूल्यांकन 1000 अंकों के पैमाने पर प्रमुख संकेतकों के आधार पर किया गया।

- **मुख्य निष्कर्ष**:
  - **शीर्ष प्रदर्शनकर्ता: चंडीगढ़** ने **719 अंक** प्राप्त कर **ग्रेड प्रचेष्टा-1** (स्कोर रेंज: 701–760) में स्थान प्राप्त किया।
  - **निम्नतम प्रदर्शनकर्ता: मेघालय** ने **417 अंक** प्राप्त किए, जिससे यह **ग्रेड आकांक्षा-3** (स्कोर रेंज: 401–460) में रखा गया।
  - **24 राज्य/केंद्र शासित प्रदेशों** नेअपने प्रदर्शन में पिछले वर्ष की तुलना में सुधार दिखाया।
  - कोई भी राज्य/केंद्र शासित प्रदेश **उच्चतम ग्रेड रेंज (761–1000)** में नहीं पहुंचा, जिससे यह संकेत मिलता है कि अभी भी समग्र सुधार की आवश्यकता है।
  - **बिहार और तेलंगाना** ने **शिक्षा तक पहुँच** के क्षेत्र में सबसे उल्लेखनीय सुधार दर्ज किया।
  - **दिल्ली, जम्मू और कश्मीर, तथा तेलंगाना** ने **अवसंरचना विकास** में सबसे अधिक प्रगति की।

- **PGI के बारे में**: यह एक डेटा-आधारित मूल्यांकन उपकरण है, जिसका उद्देश्य भारत के राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में **विद्यालय शिक्षा प्रणाली के प्रदर्शन** का मूल्यांकन करना है।
  - **प्रारंभ**: 2017 में किया गया था; अद्यतन **PGI 2.0 संस्करण** को **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020** और **सतत विकास लक्ष्यों (SDGs)** के अनुरूप है।
  - **प्रकाशक**: भारत सरकार के **शिक्षा मंत्रालय** द्वारा प्रकाशित।
  - **आवृत्ति**: यह 6 प्रमुख क्षेत्रों में प्रदर्शन का मूल्यांकन करता है, जिनमें **73 संकेतक** शामिल हैं: अधिगम परिणाम, पहुँच, अवसंरचना और सुविधाएं, समानता, शासन प्रक्रियाएं, और शिक्षक शिक्षा एवं प्रशिक्षण।
  - **ग्रेडिंग पैमाना**: कुल स्कोर **1000 अंकों** में है, जिसे **10 प्रदर्शन ग्रेड्स** में विभाजित किया गया है — **दक्ष (सर्वोच्च)** से **आकांक्षा-3 (न्यूनतम)** तक।

5. **आक्रामक विदेशी प्रजातियाँ (Invasive Alien Species – IAS):** हाल ही में, जैसे-जैसे वैश्विक व्यापार नए द्विपक्षीय समझौतों और बदलते शुल्कों के अनुरूप ढल रहा है, एक बढ़ती हुई चिंता सामने आई है: **आक्रामक विदेशी प्रजातियों (IAS)** का बढ़ता प्रसार।
   - एक नए विश्लेषण में चेतावनी दी गई है कि ये जैविक घुसपैठ, जो अक्सर व्यापार मार्गों के माध्यम से अनजाने में प्रवेश कर जाती हैं, **जैव विविधता**, **खाद्य सुरक्षा**, **जनस्वास्थ्य**, और **आर्थिक स्थिरता** के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न करती हैं।

- **मुख्य विशेषताएं: जायंट अफ्रीकन घोंघा**, जिसे औपनिवेशिक कोलकाता (लगभग 1847) में लाया गया था, भारत के सबसे पुराने और सबसे हानिकारक IAS (आक्रामक विदेशी प्रजातियों) मामलों में से एक है।
  - **जानबूझकर कराएं गए प्रवेश:** (उदा. ऑस्ट्रेलिया में केन टोड्स, भारत में मच्छर खाने वाली मछलियाँ और गप्पियाँ) जैव-नियंत्रण के लिए किए गए ये प्रयास अक्सर उल्टा प्रभाव डालते हैं।
  - समुद्री व्यापार के दौरान बायोफाउलिंग से **एशियन पैडल केकड़ा** जैसी जलीय प्रजातियाँ अदृश्य रूप से यात्रा कर सकती हैं।
  - भारत ने **PL 480 गेहूं (1955)** का आयात किया, जिससे **पार्थेनियम** नामक एक विषैली आक्रामक वनस्पति प्रजाति फैली, जो अब पूरे देश में पाई जाती है।
  - **खाद्य सुरक्षा हेतु तिलापिया** की शुरूआत ने भारतीय नदियों में देशी मीठे पानी की मछली प्रजातियों को प्रतिस्थापित कर दिया।

- **IAS के बारे में**: ये प्रजातियाँ स्वदेशी नहीं होतीं और मानवीय गतिविधियों के माध्यम से जैसे कि कृषि, जलीय कृषि, पालतू व्यापार, या परिवहन (जैसे बैलास्ट पानी) के ज़रिए प्रवेश करती हैं।
- **मुख्य विशेषताएँ**: ये तेज़ी से प्रजनन करती हैं, जिससे ये शीघ्रता से फैलकर नए आवासों पर नियंत्रण प्राप्त कर लेती हैं।
  - ये प्राकृतिक शिकारी या प्रतिस्पर्धियों की अनुपस्थिति में तेजी से फलती-फूलती हैं।
  - इनकी पर्यावरणीय सहनशीलता उन्हें चरम या विविध जलवायु परिस्थितियों में जीवित रहने की क्षमता देती है।
  - ये पोषक तत्व चक्र, अग्नि प्रतिरूप, और आवास संरचना जैसी पारिस्थितिकीय प्रक्रियाओं को बाधित करके पारिस्थितिकी तंत्र की कार्यप्रणालियों को बाधित कर सकती हैं।

6. **रुद्रास्त्र**: हाल ही में **भारतीय सेना ने रुद्रास्त्र** का सफल परीक्षण किया है, जो एक **उन्नत युद्धक्षेत्र ड्रोन** है जिसे **Solar Aerospace and Defence Limited (SDAL)** द्वारा **स्वदेशी रूप से विकसित** किया गया है।
   - **रुद्रास्त्र के बारे में**: यह एक हाइब्रिड वर्टिकल टेक-ऑफ एंड लैंडिंग (VTOL) ड्रोन है, जो हेलीकॉप्टर-जैसी टेक-ऑफ क्षमता को फिक्स्ड-विंग क्रूज़िंग से जोड़ता है, जिससे उच्च बहुपरकारी क्षमता और गुप्तता सुनिश्चित होती है।

     - इसे **गहरे स्ट्राइक मिशनों** के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो **दुश्मन की तोपखाना चौकियों या आतंकवादी शिविरों** को दुश्मन की सीमा के अंदर दूर तक जाकर निशाना बना सकता है।
     - यह ड्रोन **स्मार्ट एंटी-पर्सनल वारहेड्स** से सुसज्जित है, जो **शत्रु सैनिकों और ठिकानों पर सटीक हमले** करने की अनुमति देता है।
     - यह **50 किलोमीटर से अधिक दूरी पर स्थित लक्ष्यों को भेद** सकता है और पोखरण में परीक्षण के दौरान **170 किलोमीटर की रेंज** का प्रदर्शन किया, जिसमें यह लगभग **90 मिनट तक वायुमंडल में सक्रिय** रहा।
     - **रुद्रास्त्र अपने मिशन के दौरान रीयल-टाइम वीडियो प्रसारित** कर सकता है और हमले के बाद **स्वतः वापस लौट सकता है**।
     - इसने सफलतापूर्वक **एयरबर्स्ट आयुध** गिराया, जो ज़मीन के पास विस्फोट करता है और **विस्तृत क्षेत्र में क्षति** पहुंचाता है — यह **शत्रु शिविरों या तोपखाना ठिकानों को निष्क्रिय** करने के लिए उपयुक्त है।
     - यह ड्रोन सेना को **स्टैंड-ऑफ स्ट्राइक क्षमता** प्रदान करता है, जिससे वह **सुरक्षित दूरी से महत्वपूर्ण लक्ष्यों को भेद सकती है**, बिना सैनिकों को खतरे में डाले।